मां वागदेवी

विद्या का देवी अधिकार हमे दो,
अज्ञानता का देवी अंधेरा मिटा दो ।

हमारा संसार जगमग उजालो से भर दो ,
सबके हृदय में ज्ञान का दीपक जला दो ।

राम रमैया गोविंद गोपाल, बना दो,
रामायण का हनु हनुमंत बना दो ।

सीता लक्ष्मी दुर्गा राधा बना दो,
सावित्री मीरा सा स्वरूप बना दो ।

पांडूपुत्र धर्मवीर युधिष्ठीर बना दो ,
धनुर्धर वीर अर्जुन का तीर बना दो।

रामकथा के वनवासी लव कुश बना दो,
क्षितिज में चमकता ध्रुव तारा बना दो ।

भीलनी सबरी के तुम बेर बना दो,
विप्रवर सुदामा के चावल बना दो ।

भगवन वृंदावन के तुलसीदल बना दो,
गौतमी की शीला अहिल्या बना दो ।

परमार वंश के भृर्तहरि विक्रम भोज बना दो,
पूर्ण धार धरा पर सनातन ध्वज फहरा दो ।

हे मां गीता का उपदेश बना दो,
सत्य अहिंसा स्नेह में घर भर दो ।

निरंतर.....2

बुद्वि और विद्या का संचार करा दो,
सब के मन में सदबुद्वि ला दो ।

सब का मन नीर सा निर्मल कर दो ,
वीणा वादिनी ज्ञान की गंगा भर दो ।

इस बसंत में सबकी झोली भर दो,
हम सब पर कृपादृष्टि बरषा दो ।

हम सब बिखरे स्वजनों को एक बना दो,
क्षत्रिय धर्म की शक्ति का आभास करा दो ।

विक्रम भोज का मान बढा दो,
सबका स्वाभिमान बढा दो ।

मेरे सब शूल को फूल बना दो,
मेरी सब भूल को कूल बना दो ।

धरा पर वर वधुओं का मान बढा दो,
पंचमी बसंत पर उनका काज करा दो ।

जीवन संगिनी का जोड बना दो,
आज बसंत में पाणिग्रहण करा दो ।

मां मुझे तेरे चरण कमलो की धूल बना दो,
जगन्नाथ लेखनी को वैतरणी पार करा दो ।

जगन्नाथ पाठेकर,
बैतूल